रीतु कुमारी (March 2022). ग्रामीण संवेदना के कुशल चितेरे कवि रामइकबाल सिंह 'राकेश'
International Journal of Economic Perspectives,*16*(3), 143-147
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

ग्रामीण संवेदना के कुशल चितेरे कवि रामइकबाल सिंह 'राकेश'

रीतु कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,ल.ना.मि.वि.,दरभंगा

रामइकबाल सिंह 'राकेश' का काव्य प्रगतिशील चेतना का सन्मवाहक है। यही कारण रहा है कि इनके 'काव्य-भाव' से जहॉ एक तरफ स्वच्छंदवाद के प्रथम आलोचक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभावित हुए है तो प्रगतिशील आलोचक प्रो. चन्द्रबली सिंह भी इनकी आभा से बच नही सके हैं। 'राकेश की काव्य-रचनाओं में स्वच्छंदता और प्रगतिशीलता की धारा प्रखरता से विचर रही हैा गॉव-देहात और जनलोक चेतना के संवाहक रामइकबाल सिंह 'राकेश' अपनी खेतों के मेड़ से हिमालय की चोट पर 'काव्य-भाव' की बदौलत ही पहुँचते हैा इनके काव्य में 'दिनकर' का ओज'-तेज है तो सुकुमार कवि सुमितानंद पंत मांनिद प्रगतिशील का सूफियाता अंदाज भी मौजूद है। हिन्दि साहित्य के उत्तर छायावादी कवि 'राकेश' जी का 'काव्य-भाव-पक्ष' इतना दमदार और बेजोड़ है कि ये सहजता से देश-राग, लोक संवेदना, भक्ति और शक्ति शोषणमुक्त समाज, अध्यात्म-दर्शन सबकुछ स्पष्ट कर देते है। यह इनके काव्य में व्याप्त 'भाव-पक्ष' का ही कमाल है कि गूढ़ लोकभाषा और संस्कृत के शब्दों की प्रचूरता-पश्चता भी इनकी कविताएँ वेगभति है।

साहित्यकार रामइकबाल सिंह 'राकेश' की "कविता-संग्रह चट्टान 1946 ई. में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विशेष अभिमत"[1] के साथ प्रकाशित हुई है। गुलामी की जंजीर को तोड़ने की आतुरता का भाव तत्कालीन भारत में प्रबल हो

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **रीतु कुमारी**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022

उठा था और इस कवि संग्रह चट्टान में कवत ने जिस ओजपूर्ण, सरल और अघोपांत जागरूक भाषा का प्रयोग किया है। उसके बल पर तात्कालीन साहित्य प्रेमियों ने इसे हाथों-हाथ लिया। भाषा की सरलता के साथ नये-नये मुहावरे, उपमा और प्रयोगों ने इसमें चार चॉद लगा दिया है। 'चट्टान' काव्य संग्रह की वर्णन शैली में स्वाभाविकता का इतना अधिक समावेश हो गया है कि अभिप्रत विषय के साथ ऑखों के सौन्दर्य पान से प्रयुक्त शब्दों का दृश्य भी पाठकों के समक्ष साकार हो उठता है। असल में 'चट्टान' की कविताएँ अपने जमाने का रंग और राग ही नहीं, लेखक की आत्मा का की हुंकार सदृश्य प्रतीक होती हैं। डॉ. अमरनाथ झा ने लेखक रामइकबाल सिंह 'राकेश' को प्रकृति से भिन्न अर्थ में मानवतावादी मना है उसी मनुष्य की शक्ति और जय-यात्रा का शंखनाद कविवर राकेश चट्टान में करते है। यही वजय रही है कि इस पुस्तक के भूमिका लेखन में आचार्य द्विवेदी ने मानवीय शक्ति और विजय-यात्रा को रेखाकिंत कर लिखा है- "इतिहास और राजनीति हमें बार-बार याद दिलाते है कि मनुष्य कितनी बार थका है, हारा है, रूक गया है और लोकगीत हमें बराबर आगे की ओर मुख किए हुए दुर्जय मानव की वियज-यात्रा का संवाद सुनाते हैं। 'राकेश' की कविताओं में इस बात के सबूत है कि वे मनुष्य के इस रूप से बहुत प्रभावित हुए हैं।"[2] वैसे शैली की दृश्टि से देखें तो 'चट्टान' की रचनाएँ दो मानोभावों को दर्शाति है- रहस्यवादी या वैयक्तिक अनुभूति और आधुनिक प्रगतिशील काव्य शैली। 'शून्य घट', 'श्मशान की खोपड़ी', 'कुहेलिका', उंठल से गिरा हुआ फूल आदि रचनाएँ रहस्यवादी अनुभूतियों का संदेश सुनाती है तो 'चट्टान', 'विराट-दर्शन', 'विषमता', 'धन-कटनी', हिमालय अभियान मांविद कविताएँ प्रगति का ओजगान कर रही हैं। महाकवि राकेश के साहित्य को

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **रीतु कुमारी**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022

गहन-अध्ययन कर उनहें संपादित रूप देनेवाले साहित्यकार नंदकिशोर नवल का भी मानना रहा है कि 'चट्टान' की सबसे सुन्दर कविताएँ वे है, जो ग्रामीण जीवन ओर प्रकृति के विषय को केन्द्रित कर लिखी गई है। असल में 'चट्टान' काव्य संग्रह की अधिकांश कविताएँ 'राकेश' जी ने मुजफ्फरपुर स्थित अपने भदई गॉव के ओपड़ी में लिखी हैं। उन्होंने अपने खेतों की मेड़ पर खड़े होरक हिमालय के जिस ऊँचाई को मानवीय नजर से परखा उसे ही इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कविता 'हिमालय-अभियान' में अभिव्यक्ति किया है। ज्ञात हो कि मुजफ्फरपुर जिले के सीतामढ़ी से सरा जहॉ भदई गॉव है वहॉ से हिमालय की प्राचीर सूर्य की प्रात: किरणों में चमक उठती थी। जो पर्यावरण प्रदूषण के चलते धीरे-धीरे गौण हो गया। फिर जब वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के कारण लाकडाउन लगा तो "हिमालय का यह हिस्सा फिर से दिखने लगा है।"[3] औराई प्रखंड में ही अवस्थित महान साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी के बेनीपुरी गॉव से भी हिमालय पर्वत दिखने की बात कही जाती है। जो नेपाल के तराई हिस्से से सटे इस भारतीय हिस्से के लिए अचरज या कौतुहल का विषय नहीं है। चूंकि यहॉ से नेपाल स्थित हिमालय की दूरी महज 300 किलोमीटर के दायरे में जिसके चलते स्वच्छ हवा ओर वातावरण रहने पर प्रात: काल में हिमालय की बर्फीली चोटी का दर्शन इस क्षेत्र के लिए आम घटना रही है। वस्तुत: यहॉ कवि की 'हिमलाय-अभियान' कविता पर दृष्टिपात करने से पूर्व इस पर चर्चा आवयश्क थी कि कवि रामइकबाल सिंह 'राकेश' ने अपने भदई गॉव के खेतों में खड़े होकर सूर्य किरणों संग हिमालय को निहारा है और उसकी बुलंदी का अहसास किया है तब जाकर उन्होंने इसकी सबसे बड़ी चोटी एवरेस्ट को विजित करने के लिए हुए

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **रीतु कुमारी**

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022

मानवीय प्रयत्न को विषय बनाया है। एवरेस्ट विजय हेतु पर्वतारोहियों के अभियान की जीवटता को दर्शाते हुए उन्होंने लिखा है-

"गरूड़ की-सी भूख लेकर सिन्धु का गति-ज्वार,
प्यास उदित अगस्त्य की ले दीर्घ अमित अपार।
बने नचिकेता मनुज-दल चले भय के द्वार,
ज्ञान की विस्तीर्णता को देखने संसार।
एक ओर अजेय पर्वतराज का विस्तार,
लहलहाती शून्य ऊँची बर्फ की दीवार।"[4]

'चट्टान' संग्रह की यह लम्बी कविता सिर्फ मानवीय विजय गाथा का संघर्षपूर्ण यथार्थ ही अभिव्यक्त नहीं करता है बल्कि यह कवि राकेश के शब्द विन्यास, लय और उनकी आतंरिक क्षमता को भी स्वर देता हैं। जीवन-मृत्यु से दो-दो हाथ करनेवाले मनुष्यों में जो भावाभिमान होता है उस भाव को कवि ने 'हिमालय-अभियान' में मस्ती भरे लय में स्वर दिया है। कविता की यह रवानगी ही इसे अनूठा बनाती हैं। आलोचकों का मानना रहा है कि 'चट्टान' काव्य संग्रह चूंकि कवि राकेश का पहला संग्रह है इसलिए इसमें अनुभव हीनता की झलक मिलती हैं। ऐसे आलचकों को इस संग्रह की कुछेक कविताओं पर सुमित्रानंदन पंत का अक्स भी दिखता हैं। पर सच्चाई यह है कि पंतजी की प्रगतिशील चेतना संकीर्णता से मुक्त थी और इन पर मार्क्सवाद का भी गहरा प्रभाव था यही कारण रहा है कि इन्होंने गॉधी दर्शन से प्रभावित कविताएँ भी लिखी हैं। 'चट्टान' काव्य संग्रह में कवि राकेश ने भी 'काल-पुरूष गॉधी 'शीर्षक से कविता लिखी है और गॉधीवाद को प्रगतिशीलता की कसौटी पर कसा है। 'चट्टान' में अभिव्यक्त प्रगतिशीलता असल

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **रीतु कुमारी**

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022

में विशुद्ध मानवीय प्रगति पर आधारित है। ग्रामीण संवेदना से भरे लोकभाषा के शब्द और संस्कृत के शब्दों की बहुलता के बावजूद यह काव्य संग्रह सरस और मानवीय हृदयग्राही है। इस संग्रह के पश्चात ही कवि राकेश छायावादोत्तर काव्यधारा की अवसान वेदी पर प्रज्वलित प्रगतिवादी घरातल पर मानवतावाद की बुलंद ध्वजा फहराते अवतरित हुए है। इनकी साहित्यिक सुरभि किसी भी मायने में अपने समकालीन साहित्यकारों से कम नहीं है बल्कि की कई मायनों में बेहतर है। फिर भी इनका नाम गुमनाम साहित्यकारों मे शुमार होता है और इनके अभिन्न पहलूओं का हिन्दी साहित्य की आधुनिक धारा में मंथन नहीं हुआ है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची:

1) 'राकेश समग्र' संपादक-नंदकिशोर नवल प्रकाशक वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2001 पृ. सं. 05

2) वही, पृ. सं. 115

3) मैथिली लोकगीत संपादक रामइकबाल सिंह 'राकेश' प्रकाशक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, वर्ष 1942 पृ. सं. 17

4) 'राकेश समग्र' संपादक-नंदकिशोर नवल प्रकाशक वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2001 पृ. सं. 134

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **रीतु कुमारी**

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022